रिकार्ड–बचपन के दिन भुला.....ओमशांति प्रातःक्लास 8.1.67

मीठे2 सिकीलधे बच्चों ने यह गीत सुना।ड्रामा प्लानअनुसार (ऐसे)2 गीत सलैक्ट किये हुये हैं।मनुष्य चकित होते हैं कि यह क्या नाटक कि रिकार्ड पर वाणी चलाते हैं।यह फिर किस प्रकार का ज्ञान है।शास्त्र ,वेद ,उपनिषद आदि छोड़ दिये।अब रिकार्ड के उपर वाणी चलाते हैं।यह भी तुम बच्चों की ही बुद्धि में है।हम बेहद के बाप के बने हैं।जिनसे अतिइन्द्रिय सुख मिलता है।ऐसे बाप को भूलना ना है।बाप की याद से ही जन्म जन्मांतर के पाप दग्ध होने हैं।ऐसे ना हो जो याद को छोड़ दो विकर्म रह जाये।तो पद भी कम हो जावेगा।ऐसे बाप को अच्छी रीति याद करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।जैसे बच्चे और बच्ची की सगाई होती है तो फिर एक–दो को याद करत हैं।तुम्हारी भी सगाई हुई है।फिर जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो तब फिर विष्णुपुरी में जावेंगे।अभी शिवबाबा भी है प्रजापिता ब्रह्मा बाबा भी है।दो इंजन मिले हैं।एक निराकार दूसरा साकार।दोनों ही मेहनत करते हैं कि बच्चे स्वर्ग के लायक बन जावें।सर्वगुण सम्पन्न.....अहिंसा मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है।यहां इम्तिहान पास करना है।यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं।यह पढ़ाई बड़ी वंडरफुल है भविष्य 21जन्मों के लिए।और पढ़ाइयां होती हैं मृत्युलोक के लिए।यह पढ़ाई है अमरलोक के लिए।इसके लिए पढ़ना तो यहां है ना।जब तक आत्मा प्योर ना बने सतयुग जाय नहीं सके।इसलिए बाप संगमयुग पर ही आते हैं।इसको पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है जब कि तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो।इसलिए श्रीमत पर चलते रहो।श्री2 शिवबाबा को ही कहा जाता है।माला का अर्थ भी बच्चों को समझाया है।उपर में फूल है शिवबाबा।फिर है युगल मेरू।प्रवृत्ति मार्ग है ना।फिर है दाने जो विजय पाने वाले हैं।रुद्र माला, फिर विष्णु की माला बनती है।इस माला का अर्थ कोई भी नहीं समझते हैं।रुद्राक्ष दाने होते हैं।इसमें भी कई प्रकार होते हैं।जै चंदन के बॉक्स बनते हैं।कोई दो रुपये भी होता है।कोई 25रुपये भी होता है।कोई के उपर सिर्फ पानी चढ़ाकर खूशबू कर देते हैं।तो बाप बैठ समझाते हैं तुम बच्चों को कौड़ी से हीरे जैसा बनना है।63जन्म तो बाप को याद करते आये हो।तुम सभी आशिक हो एक माशूक के।सब भक्ति हैं एक भगवान की।पतियों का पति, बापों का बाप वो एक ही है।तुम बच्चों को राजाओं का राजा बनाता हूँ।खुद नहीं बनते हैं।यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं।बाप बार2 समझाते हैं बाप की याद से तुम्हारे जन्म जन्मांतर के पाप कर्म भस्म होंगे।साधु–संत महात्मा तो कह देते आत्मा निर्लेप है।बाप समझाते हैं कि संस्कार अच्छे वा बुरे आत्मा ही ले जाती है।वो कह देते आत्मा निर्लेप है।बस जिधर देखता हूँ सब भगवान ही भगवान हूँ।भगवान ही यह सब लीला करते हैं।बिल्कुल ही वाममार्गीय गंदे बन जाते हैं।ऐसे ऐसों की मत पर भी लाखों मनुष्य चल रहे हैं।यह भी ड्रामा में नूंध है।हमेशा बुद्धि में 3धाम याद रखो।शांतिधाम जहां आत्मायें रहती हैं।सुखधाम जहां के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो।दुःखधाम शुरू होता है आधा कल्प बाद।भगवान को कहा ही जाता है हैविनली गॉडफादर।वो कोई हेल नहीं स्थापन करते हैं।बाप कहते हैं मैं तो सुखधाम स्थापन करता हूँ।बाकी यह हार और जीत का ही तो खेल है।अभी माया रूपी रावण पर तुम श्रीमत से जीत पाते हो।फिर आधा कल्प बाद रावणराज्य शुरू होता है।इनको कहा ही जाता है अंधों की औलाद अंधे।गीता भागवत में भी अक्षर है।बाप खुद कहते हैं वो है अंधे की औलाद अंधे।यह है सज्जे।धृतराष्ट्र और युधिष्ठिर।तुम बच्चे अभी युद्ध के मैदान में हो।यह भी बुद्धि में धारण करना है और समझाना है।अंधों की लाठी बन घर का रास्ता बताना है ;क्योंकि सभी इस घर को भूल गये हैं।कहते भी हैं कि यह एक नाटक है ;परंतु इसकी आयु लाखों, हजारों वर्ष कह देते हैं।बाप समझाते हैं रावण ने तुमको कितना अंधा बना दिया है।अभी बाप सब बातें समझा रहे हैं।बाप को ही नालेजफुल कहा जाता है।इसका मतलब यह नहीं है कि एक हरेक के अंदर को जानने वाला हूँ।वो तो रिद्धी–सिद्धी वाले सीखते हैं।तुम्हारे अंदर की बातें सुना देते हैं।नालेज का अर्थ यह नहीं है।यह तो बाप की ही महिमा है वो ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर है।मनुष्य तो कह देते वो अंतर्यामी है।

उनको और कोई काम नहीं है?एक–एक के अंदर को बैठ जानेंगे क्या?अभी तुम बच्चे समझते हो वो तो टीचर है।हमको पढ़ाते हैं।वो रुहानी बाप भी है।रुहानी टीचर भी है।रुहानी सतगुरू भी है।वो तो जिस्मानी होते हैं।सो भी अलग2 ।तीनों एक तो हो नहीं सकते। (करके) कोई2 बाप,टीचर भी होते हैं।गुरू तो हो ना सके।वो तो फिर भी मनुष्य हैं।यहां तो यह है सुप्रीम रुह।परमपिता परमात्मा।आत्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता है।यह भी कोई समझते नहीं हैं।कहते हैं परमात्मा ने अर्जुन को सा. कराया।कहा बस करो हम तेज सहन नहीं कर सकते हैं।यह सब सुना हुआ है तो समझते हैं परमात्मा तेजोमय है।आग के पास आते थे तो सा. में चले जाते थे।कहते थे बस करो बहुत तेज है।हम सहन नहीं कर सकते हैं।जो सुना हुआ है वो ही बुद्धि में भरा रहता है।बाप कहते हैं जो जिस भावना से याद करते हैं मैं वो उनकी भावना पूरी करता हूँ।कोई गणेष का पुजारी होगा तो उसको गणेष का सा. करावेंगे।सा. होने से समझते हैं बस मुक्तिधाम पहुंच गये ;परंतु नहीं।मुक्तिधाम में कोई भी जा नहीं सकते।नारद का भी मिसाल है।वो शिरोमणि भक्त गाया हुआ है।पूछा हम लक्ष्मी को वर सकते हैं?तो कहा तुम अपनी शक्ल तो देखो।तो देखी बंदर जैसी शक्ल।भक्त दुर्गति को पाये हुये वो फिर मुक्ति को कैसे पावेंगे?भक्त माला भी होती है।फीमेल में मीरा और मेल में नारद मुख्य गाया हुआ है।यहां ज्ञान में फिर मुख्य शिरोमणि है सरस्वती।नम्बरवार तो हैं ना।बाप समझाते हैं माया से बड़ा खबरदार रहना है।माया (ऐसे) उल्टा काम बराबर लेगी फिर बाद में रोना पड़ेगा।भगवान आया ;परंतु हम वर्सा ले नहीं सके।फिर प्रजा में भी दास दासियां जाकर बनेंगे।पिछाड़ी में पढ़ाई तो पूरी हो जाती है।फिर बहुत पछताना पड़ेगा।इसलिए बाप पहले से ही समझा देते हैं ताकी फिर पछताना ना पड़े।जितना बाप को याद करते रहेंगे तो योगाग्नि से पाप भस्म होंगे।आत्मा सतोप्रधान,फिर इसमें खाद पड़ते2 तमोप्रधान बनी है।गोल्डन एज, सिल्वर एज.....नाम भी है ना।अभी आयरन एज हो फिर गोल्डन एज में जाना है।प्योर बनने बिना आत्मायें जा ना सकें।सतयुग में प्योरिटी भी है तो पीस भी है।प्रॉस्पर्टी भी है।यहां प्योरिटी नही तो पीस प्रॉस्पर्टी भी नहीं है।रात–दिन का फर्क है।तो बाप समझाते हैं यह बचपन भूल ना जाना।बाप ने एडाप्ट किया है।ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता है।यह एडाप्शन है।स्त्री को एडॉप्ट किया जाता है।बाकी बच्चों को फिर क्रियेटर कहा जाता है।स्त्री को एडाप्ट किया जाता है।उसको रचना नहीं कहेंगे।यह भी बाप एडाप्ट करते हैं कि तुम हमारे बच्चे हो।बाप कहते हैं तुम हमारे वो ही बच्चे हो जिनको कल्प पहले एडाप्ट किया था।एडाप्टेड बच्चों को ही बाप से वर्सा मिलता है।उंच ते उंच बाप से उंच ते उंच वर्सा मिलता है।वो है ही भगवान।फिर सेकेंड में है ल.ना.विश्व के मालिक।अभी तुम सतयुग के मालिक बन रहे हो।अभी सम्पूर्ण नहीं बने हो।बन रहे हो।तुम अभी रुहानी सेवा करते हो।इसलिए तुम बहुत उंच हो।शिवबाबा भी पतितों को पावन बनाते हैं।तुम भी पतितों को पावन बनाते हो।रावण ने कितना नालायक बुद्धि बना दिया है।अभी फिर बाप लायक बनाकर विश्व का मालिक बनाते हैं।ऐसे बाप को फिर पत्थर–भित्तर–ठिक्कर में कैसे कह देते हैं?बाप कहते हैं यह भी खेल बना हुआ है।फिर भी ऐसे ही होगा।अभी ड्रामा प्लानअनुसार आया हूँ तुमको समझाने।इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ता है।बाप एक सेकेंड भी देर नहीं कर सकते।जैसे बाबा को रिइनकारनेशन है तो बच्चों का भ्झी रिइनकारनेशन होता है।तुम भी अवतरते हो।आत्मा यहां आकर फिर साकार में पार्ट बजाती है।इसको कहा जाता है अवतरया।उपर से नीचे पार्ट बजाना।बाप का यह आलौकिक दिव्य जन्म है।श्रीकृष्ण को तो माता के गर्भ से जन्म मिला ना।बाप खुद कहते हैं मुझे भी प्रकृति का आधार लेना पड़ता है।मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ।यह मुकर्रर तन है।दूसरे कोई में कभी आते ही नहीं हैं।हां, इन बच्चों में कब मम्मा बाबा आ सकते हैं मदद करने।कब अनन्य बच्चे भी आ सकते हैं।आगे हम (श्रीलक्ष्मी ना.) को भी बुलाते थे।36 प्रकार का भोजन बनाते थे।यह बच्चे

आपस में सारा दिन बहलते रहते थे।मिरुआ मौत मलूका शिकार।यह बच्चे आपस में खेल–पाल करते रहते थे।ध्यान में जाकर डांस करते थे।छोटी2 बच्चियां ऐसे2 बैठे ध्यान में चली जाती थीं।आंखों को बंद और वैकुंठ में खेलती रहती थीं।यह सब ड्रामा में पार्ट है।फिर वो आज कहां हैं?बहुत चली गईं।कोई ने तो शादी भी कर ली।बाबा जानते हैं बाम्बे में तो मिलने आती हैं।बाप बैठ कर सभी वेदों–शांस्त्रों आदि का तुमको सार समझाते हैं।यह भी शास्त्र पढ़ते थे ना।इनकी तो बहुत गुरू किये हुये हैं।12 गुरू किये थे।भक्त गुरू के थे।कृष्ण पिछाड़ी तो बहुत डांस करते थे।फिर अनेक हठयोग भी सीखे।फिर वो छोड़ दिये।यह सब पार्ट फिर भी बजाना है ना।84जन्मों का पार्ट फिर ऐसे ही बजावेंगे।तुमको कितनी क्लीयर नालेज है।सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।महारथियों की बाबा महिमा तो करते हैं ना।यह जो दिखाते हैं पांडवों और कौरवों की युद्ध हुई वो तो सब हैं बनावटी बातें।अभी तुम समझते हो वो तो है जिस्मानी डबल हिंसा।तुम हो रुहानी डबल अहिंसक।बादशाही लेने लिए तुम देखो बैठे कैसे हो।जानते हो बाप की याद से हमारे विकर्म विनाश होंगे।यह फुरना लगा होना चाहिए।और है।मेहनत सारी याद करने में ही है।इसलिए भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है।वो बाहर वाले भी भारत का प्राचीन योग सीखना चाहते हैं।समझते हैं साधु लोग हमको यह योग सिखावेंगे।वास्तव में वो सिखाते कुछ भी नहीं हैं।उनका सन्यास है ही हठयोग का।तुम हो प्रवृत्तिमार्ग वाले।तुम्हारी शुरू में ही किंगडम थी।अब है अंत।अभी तो पंचायती राज्य है।शास्त्रों में कितनी झूठी बातें लिख दी हैं।कहते हैं द्रौपदी को 5पति थे।चकराता में भी माइयां 5पति करती हैं।यह सारा गंद इन शास्त्रों में से निकला है।पंडितों आदि को समझाओ तो मानते भी हैं बरोबर यह ठीक है ;परंतु यह कहें कि शिव बाबा भगवान है।शिव भगवानोवाच्य है ,ना कि कृष्णभगवानोवाच्य। तो सब उनको कहें तुमको ब्रह्माकुमारियों का जादू लगा है।भागो यहां से।धंधा ही खतम हो जाते।दुनियां में अंधकार तो बहुत है ना।अब तो खूनी नाहक खेल होना है।यह भी एक खेल दिखाते हैं।यह तो है बेहद की बात।तुम जानते हो कितना खून होगा।नैचुरल कैलेमिटीज भी होगी।सबका मौत होगा।इसको खूनी नाहक कहा जाता है।इसमें देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए।डरपोक तो झट बेहोश हो जावेंगे।इसमें निडरपना बहुत चाहिए।तुम तो शिव शक्तियां हो ना।शिवबाबा है सर्वशक्तिवान।हम उनसे शक्ति लेते हैं।पतित से पावन बनने की युक्ति बाप ही बताते हैं।बाप बिल्कुल सिम्पल राय देते हैं।तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो।अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन सतोप्रधान बन जावेंगे।आत्मा को बाप के साथ योग लगाना है तो पाप भस्म हो जावेंगे।यथार्थ भी बाप ही है।चित्रों में दिखाते हैं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला।इन द्वारा बैठकर सभ वेदों ,शास्त्रों का सार सुनाया।यह तुम जानते हो ब्रह्मा सो विष्णु।विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं।ब्रह्मा द्वारा स्थापना।फिर जो स्थापना करते हैं ,पालना भी जरूर वो ही करेंगे।यह सब राज अच्छी रीति समझाये जाते हैं।समझते हो इनको यह खयाल रहेगा कि कैसे सबको यह रुहानी ज्ञान मिलना चाहिए।हमारे पास धन है तो जाकर सेंटर खोलो बहुतों का कल्याण होगा।बाप कहते हैं अच्छा किराये पर ही मकान ले लो।उसमें ही हास्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोलो।योग से है मुक्ति ज्ञान से जीवनमुक्ति।इसमें सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के चाहिए और कुछ नहीं।गॉड फादरली यूनिवर्सिटी खोलो।आगे हमने यूनिवर्सिटी अक्षर लिखा था तो गवर्मेंट ने यूनिवर्सिटी नाम रखने नहीं दिया।अब विश्व विद्यालय तो नाम रखा है।अब विश्वविद्यालय वा यूनिवर्सिटी बात एक ही है।कितना समझाया अरे ,यह गॉडफादरली यूनिवर्सिटी है जिसमें मनुष्य से देवता बनने की नालेज देते हैं।कितना समझाया ;परंतु कहा कि गवर्मेंट का कायदा नहीं है।अब उनसे कौन माथा मारे हर एक की मत अपनी2 है।अच्छा मीठे2 बच्चों को नमस्ते।